Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December 2020 Special Issue 256 (C)

## Multidisciplinary Research

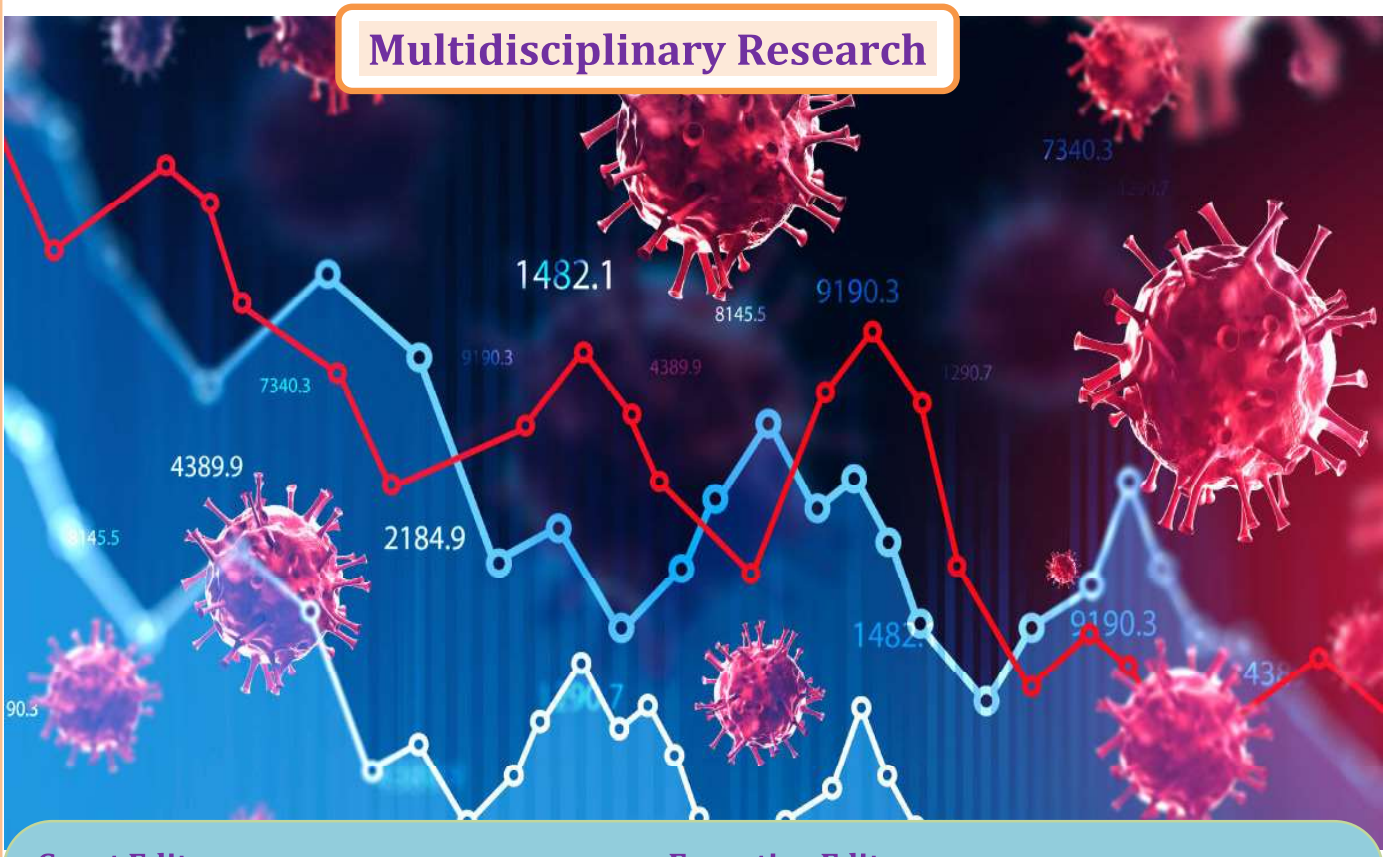


Guest Editor -
Prof. Dr. Rajani Shikhare,
Principal,
R. B. Attal College, Georai
Dist. - Beed.

Executive Editors :
Dr. B. D. Rupnar,
Dr. P. P. Pangrikar
Mr. S.S. Nagare
Mr. Ranjeet Pagore,

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

**Impact Factor – 6.625** **E-ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December 2020 Special Issue 256 (C)

## Multidisciplinary Research

**Guest Editor -**
**Prof. Dr. Rajani Shikhare,**
**Principal,**
**R. B. Attal College, Georai**
**Dist. - Beed.**

**Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar**

**Executive Editors :**
**Dr. B. D. Rupnar,**
**Dr. P. P. Pangrikar**
**Mr. S.S. Nagare**
**Mr. Ranjeet Pagore,**

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

***- Chief & Executive Editor***

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
**For Details Visit To : www.researchjourney.net**

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher **Price : Rs. 1000/-**

# INDEX


| No. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | Releastic Approach in R. K. Narayan's Novel *'The Guide'* | **Dr.V. S. Bandal** | 04 |
| 2 | Cultural Studies : An Introduction | **Mr. Arun Jadhav** | 11 |
| 3 | Sanitation and Social Change | **Mr. R. B. Kale** | 13 |
| 4 | Rotating Fluid of Magneto Hydrodynamics Flow Past an Impulsively Started Infinite Vertical Plate | **Vinod Kulkarni, Vijay Sangale** | 16 |
| 5 | An Efficient Synthesis of 5-Substituted 1H-Tetrazole Using Eton's Reagent in Water | **Rupnar B.D, Shirsat A.J. Jadhav S. B. Bhagat S.S.** | 22 |
| 6 | Crop Insurance in India | **B.S.Jogdand** | 27 |
| 7 | Outline of Modern Research | **Dr. Laxmikant Jirewad** | 31 |
| 8 | Second ARCs Views on Right to Information Act | **Hanmant Helambe** | 35 |
| 9 | An Introduction to Smart Libraries | **R.B. Pagore, Dr. B. V. Chalukya** | 38 |
| 10 | Impact of Cassine Albens Gum on Incidence of Seed Mycoflora in Different Crop Seeds | **K.V. Badar, P.P. Pangrikar** | 47 |
| 11 | Synthesis, Characterization and Antimicrobial Analysis of Some New Substituted Pyrazoles From Chromones | **Amol Shirsat, Balaji Rupnar, Sunil Bhagat** | 52 |
| 12 | Synthesis and Characterization of Ni (II) and Mn (II) Metal Complexes of Novel Schiff's Base Ligand | **Vrushali Gavhane, Anjali Rajbhoj, Suresh Gaikwad** | 57 |
| 13 | Image Classification Using Fuzzy Logic | **Pradeep Gaikwad** | 61 |
| 14 | Resistivity of Food Preservative Potassium Meta –Bisulphate Using (TDR) Technique | **S. G Badhe, S. N. Helambe, T. A.Prajapati** | 65 |
| 15 | Studies on Effects of Gamma Radiation on Iron Oxide in the Energy Range 122-1330 Kev | **Pradip S. Dahinde** | 68 |
| 16 | Effect of N-Fertilizers on Silage Fermentation | **Smita Basole , Sunita Bhosle and Prashant Pangrikar** | 74 |
| 17 | Investment Awareness Program (IAP): Need in Uncertain Market Conditions | **Dr. Sandip Vanjari** | 79 |
| 18 | Impact of Covid19 on Health and Hidden Cost of Covid | **Dr. Vivek Waykar** | 83 |
| 19 | Studies on Physico-Chemical Parameters of Bore Well Water in Satara Parisar, Aurangabad, India | **Jagannath Godse, Sanjay Ubale** | 86 |
| 20 | Synthesis and Antimicrobial Screening of Novel Pyrazole Substituted Chlorochromones | **S. S. Bhagat, B. D. Rupnar, A. J.Shirsat** | 89 |
| 21 | Women's Human Rights & Women Empowerment | **Dr. S.N. Satale** | 92 |
| 22 | Biodiversity of Butterflies Around Georai Region | **A. M. Budrukkar** | 96 |
| 23 | चूडिया की खनखनाहट और पायलों से फुटते विद्रोह का बिगुल : 'बेघर सपने' | **संतोष नागरे** | 99 |
| 24 | लोकनाट्य आणि समाजशास्त्र | **डॉ. संदीप बनसोडे** | 105 |
| 25 | मराठी भाषा आणि साहित्यासाठी एकविसाव्या शतकाची सुरुवात | **डॉ. समाधान इंगळे** | 107 |
| 26 | दलित स्त्री जीवन के शोषण का जिवंत दस्तावेज : 'जीवन हमारा' | **प्रो. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव** | 110 |

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -256 (C) : Multidisciplinary Research
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Dec. 2020

# दलित स्त्री जीवन के शोषण का जीवंत दस्तावेज: 'जीवन हमारा'

**प्रो. रजनी शिखरे**
**प्राचार्य एव हिंदी विभाग प्रमुख,**
**आर. बी. अट्टल महाविद्यालय गेवराई**

**राजाराम जाधव**
**श्री. सिध्देश्वर महाविद्यालय, माजलगाव**

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में स्त्री को लेकर विसंगति पायी जाती हैं। जहाँ उसे एक ओर देवी के रुप में पूजा जाता है वहीं दूसरी ओर उसकी उपेक्षा की जाती है। स्त्री को लेकर भारतीय समाज में दोहरे मानदंड देखने को मिलते हैं।

साहित्य समाज का प्रतिबिंब हैं। जो समाज में उत्पन्न प्रत्येक समस्या को उजागर करता हैं। मराठी से हिंदी में अनूदित दलित आत्मकथाओं ने स्त्री जीवन के शोषण की वास्तविकता को उजागर किया है। उसमें 'अछूत', 'छोरा कोल्हाटी का', 'अक्करमाशी', 'डेराडंगर', 'उचक्का', 'बेरड', 'आयदान', 'असीम है आसमा', 'जीवन हमारा', 'तराल अंतराल', 'मुक्काम पोस्ट देवाचे गोठणे', 'पराया', 'यादों के पंछी' आदि प्रमुख आत्मकथा हैं। दलित जीवन की वास्तविकता और दलित स्त्री जीवन के शोषण की परिसीमा का इसमें वर्णन आया हैं। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर को अपेक्षित स्वातंत्र्य, समता और न्याय पर अधारित समाज की मांग करती आत्मकथाओं में दलित स्त्री जीवन की व्यथा, वेदना अपने चरमरुप मे दृष्टिगत होती है। बेबी कांबले ने अपनी आत्मकथा 'जीवन हमारा ' के माध्यम से दलित स्त्री जीवन की व्यथा को बडी बेबाकी के साथ अभिव्यक्त किया हैं।

जीवन हमारा यह 'जिण आमचं' इस मराठी आत्मकथा का हिंदी अनुवाद है। इस आत्मकथा के प्रकाशन से मराठी साहित्य में काफी हलचल पैदा हुई थी। इस आत्मकथा में दलित समुदाय की भयावह सामाजिक स्थिति, उसके जीवन की भीषण वास्तविक्ताओ और उसके रोमांचकारी सांस्कृतिक अनुभवो को विशद किया हैं। मैनेजर पांडेय इस संदर्भ में लिखते हैं कि, "जीवन हमारा में गुलामी का वह पेचीदा तंत्र भी सामने आता है जिसमें स्वयं सवर्णो की गुलामी के शिकार दलित पुरुष अपने घर की स्त्रियों को गुलाम समझते हैं और उन पर हर तरह के अत्याचार करते हैं। यही नहीं, घर के भीतर सास अपनी बहू के साथ गुलामों जैसा व्यवहार करती हैं, उसे अनेक प्रकार की यातनाएँ देती हैं। गुलामी का इस सर्वग्रासी प्रक्रिया के विकराल रूप और उसके चंगुल में फसें दलित समुदाय विशेष रूप से दलित स्त्री की लाचारी तथा पीड़ा की जैसी अभिव्यक्ति इस रचना में बेबी काम्बले ने की हैं वैसी कोई गैर दलित तो क्या दलित पुरुष भी नहीं कर सकता। इससे दलित स्त्री जीवन की स्थिति समाज के सम्मुख आने में मदत मिली हैं।"[1]

'जीवन हमारा' आत्मकथा लेखिका के कटु अनुभवों से भरी हुई हैं। अस्पृश्यता और अंधश्रध्दा में जीवन जीते डोम समाज के भयावह वास्तव को लेखिका स्पष्ट करती हैं। सवर्ण समाज अस्पृश्यता के कारण दलित स्त्री पर अत्याचार करता नजर आता हैं। इसे व्यक्त करते हुये लेखिका कहती हैं कि, "अरे ओ डोमनी, दूर खडी रह छुआछूत मत कर। हमारा धर्म भ्रष्ट होगा। हरम्जादी .. धर्म भ्रष्ट करने आई हैं.. ।"[2] इस प्रकार अस्पृश्यता की भावना के कारण दलित स्त्री को अपमान के घूंट पीकर जीवन जिना पडता हैं।

अंधश्रध्दा तो दलित समाज में कुट-कुट कर भरी हुई हैं। आत्मकथा में भूत-पिशाच, जादू - टोना, देवी - देवता, लमाण-पठाण, आग्या-बेताल आदि पर इन लोगों का अतिविश्वास दिखाई देता हैं। इन सबका डोम लोगो के शरीर में संचार होना यह आम बात दिखाई देती हैं। इन सबका डोम लोगो के शरीर में संचार होना आम बात हैं। बेबी कांबले के नानाजी अपने समाज में व्याप्त अंधश्रध्दा के बारे में कहतें हैं- "मुरडी न हो, देवदासी न हो, पोतराजा न हो, अरे तो ए चाहता क्या हैं? केवल 'चुरुट' चाहिए इसे। पीढियों से हम लोग अपनी पहली संतान खंडोबा को समर्पित करते रहे हैं।

मुरडी हमारी कुलदेवता के समान हैं। इसीलिए डोम के सभी बच्चों पर खंडोबा की कृपादृष्टि रहती हैं।"[3] इस प्रकार की अंधश्रध्दा दलित समाज के लोगो में दिखाई देती है जिसे लेखिका ने आत्मकथा में स्पष्ट किया हैं।

शिक्षा के प्रति अज्ञान डोम समाज में हैं। डॉ.आंबेडकर के विचारों से प्रेरणा लेकर लेखिका के नानाजी अपने लोगों को शिक्षा का महत्व समझाने की कोशिश करते हैं। नानाजी की बातों का विरोध करते हुए लोग कहते हैं कि, "अरे बच्चों को स्कूल भेजकर क्या मास्टर-वास्टर बनाना हैं..? स्कूल पढने से क्या ये ब्राम्हण हो जायेंगे ... ? क्या उल्टी गंगा बहा रहा है। हम इस पांढरी देवी की संतान हैं। उसने जैसा काम हमारे हिस्से दिया हें हम वही करेंगे। क्यू चाहिए हमे बाहर का ज्ञान .. ?"[4] इस प्रकार के पुराने विचार इन लोगों के दिलो-दिमाग में बैठे हुए हैं जिसे लेखिका ने स्पष्ट करने की कोशिश की हैं। एवं रीति-रिवाजो को दलित समाज छोडना नही चाहता। "इसलिए लेखिका अपने समाज को बिना पूँछ के जानवरो की उपमा देती हैं ।"[5] इससे दलित समाज में अज्ञान की जडे कितनी गहरी थी यह समझ में आता है।

एक स्त्री ही दुसरी स्त्री की शत्रु होती है यह अनुभूति आत्मकथा में आती हैं। स्त्री व्दारा दूसरे स्त्री पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार को लेखिका ने विशद किया हैं। दूसरे परिवार से आनेवाली बहू इस अत्याचार का शिकार होती हैं। बहू को डोम समाज के लोगों ने गुलाम बनाया हैं। उनकी मानसिकता के संदर्भ में लेखिका कहती हैं कि, "समाज ने हमें गुलाम बनाकर रखा था लेकिन हम गुलाम भी इन्सान ही थे। हमारी भी इच्छा होती कि हम भी किसी पर अपनी हुकुमत चलाये, किसी को गुलाम बनाये। पर हमारी हुकुमत कौन सहन करता ...? इसलिए हमने अपने ही घर के लोंगो को गुलाम बनाने की सोची। और गुलाम बनाया पराये घर से आई हुई लडकी अर्थात बहू को।"[6] छोटी सी यह लडकी जिसकी खेलने की उम्र में उसे कठिन काम करने पडते हैं। यदि वह काम नहीं कर पाती तो सास व्दारा, ससूर व्दारा, पति व्दारा पीटती हुई नजर आती हैं। उसके प्रति बुरे शब्दो का उच्चारण कर उसे अपमानित किया जाता हैं। ससूर अपने बहू के विरुध्द बेटे को भडकाते हुए कहता है कि, "तू अपनी औरत की नाक काटकर उसके भाई और बाप को भेज दे। वे साले पंचात में बैठने के लायक ही नहीं रहेंगे।"[7] इस प्रकार बहू पर अन्याय कर अपने ही सगे- संबंधियो को अपमानित करने के विचार यहाँ दिखाई देते हैं। यह सब अज्ञान एंव अशिक्षा के कारण होता हैं। बहू को अपने बेटे से मिलने न देना, मुँह अंधेरे में ढेर सारा अनाज पिसवाना, बहु के संबंध में अनाप-शनाप बाते कहकर बेटे को बहकाना, बहू इस अत्याचार से त्रस्त होकर अपने पीहर भाग गई तो उसे अपने माता-पिता से गालियाँ सुननी पडती थी। पुनः इस प्रकार भाग न जाए इसलिए पैरो में पाँच किलो वजन के लकडी का खोडा पहनाया जाना बहू को कुल्टा साबित करना, अपने बहू का नाक कटवाना, ऐसे एक ना अनेक अत्याचार स्त्री पर किये जाते थे। एक प्रकार से जानवरों- सा जीवन स्त्री को जिना पडता था। इन सभी बातों को लेकर बेबी कांबले ने अपने आत्मकथा 'जीवन हमारा' स्त्री जीवन की दर्दभरी दास्तान का बेबाक चित्रण किया हैं। इस संदर्भ में डॉ.सुनिता साखरे लिखती हैं, "जीवन हमारा में जिस जीवन का चित्रण है उसकी वास्तविकता इतनी भीषण और बीभत्स है कि उनके चित्रों से गुजरता हुआ पाठक बेचैनी और संत्रास अनुभव करता हैं। इस आत्मकथा को पढना महाराष्ट्र के डोम समाज को ही नहीं वरन समस्त पददलित जातियों के हाहाकार और विलाप को अनुभव करना हैं।"[8]

अतः हम कह सकते हैं कि बेबी कांबले की आत्मकथा 'जीवन हमारा' दलित स्त्री जीवन के शोषण का जीवंत दस्तावेज हैं।

**संदर्भसूची**

1. बेबी काम्बले, जीवन हमारा, पृ.08
2. वही, पृ.91
3. वही, पृ.79

4. वही, पृ.78
5. वही, पृ.59
6. वही, पृ.99
7. वही, पृ.111
8. डॉ.सुनिता साखरे, हिंदी और मराठी का दलित साहित्य का मूल्यांकन, पृ.53-54